

महिलाओं की एक सम्पूर्ण पत्रिका

फुलेश्वरी

हिन्दी साप्ताहिक डिजिटल पत्रिका

वर्ष - 1, अंक - 2, शीघ्र प्रकाशन, सम्पादक - पूरन चन्द्र शर्मा



आज भी दूर की कौड़ी है स्त्रियों की समानता



लड़के की शादी कैसे करें?

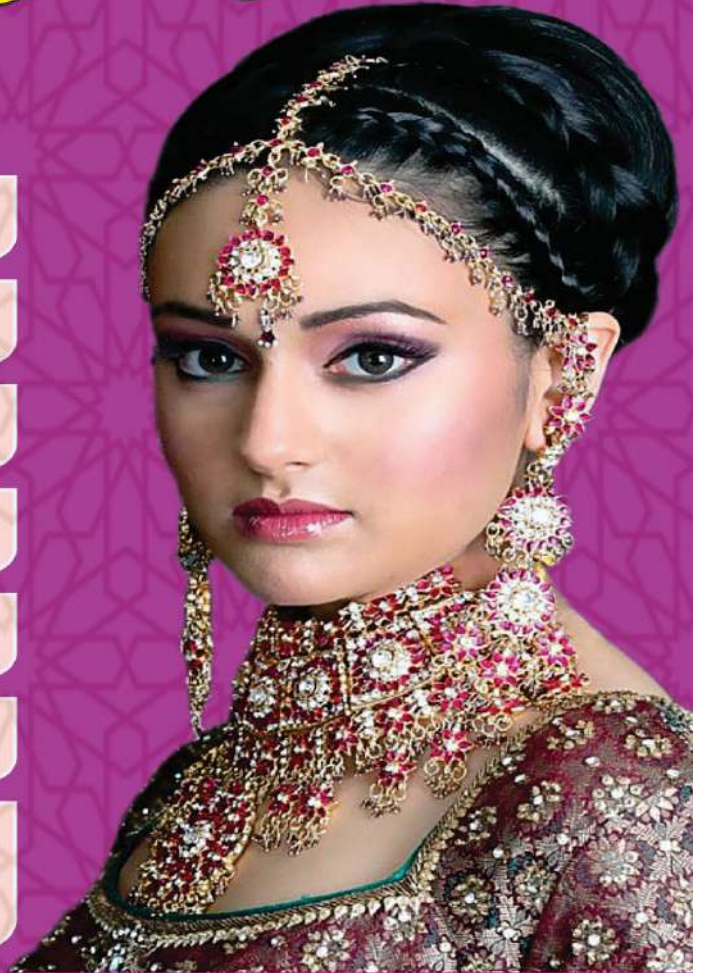


बच्चों का बचपन छीन रहे हैं प्लेस्कूल

GDSQ

Gold Diamond Silver Queen Jewellers

- Gold
- Diamond
- Kundan
- Jadau
- Polki
- Ruby
- Designer Bridal Sets



Pioneer of Hallmark Jewellery in North Bengal

Mittal Bhawan Lane, Seth Srilal Market, Siliguri-734001

Contact: 98323-75446, 98007-00333, (O)0353-2533898

Email: gdsqueenjewellers@gmail.com

4 सम्पादकीय

5



आज भी दूर की कौड़ी है स्त्रियों की समानता

9



लड़के की शादी कैसे करें?

अन्य स्तम्भ:-

साप्ताहिक व्रतोत्सव (34)

वैधानिक सूचना

17



बच्चों का बचपन छीन रहे हैं प्लेस्कूल

25



कई रोगों को दूर करती है तुलसी

● फुलेश्वरी में प्रकाशित की गयी प्रत्येक रचना की मौलिकता का दायित्व स्वयं लेखक का है। इस संबंध में सम्पादक का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। फुलेश्वरी में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार है। सम्पादक का उसमें सहमत होना अनिवार्य नहीं है। पत्रिका के सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जलपाईगुड़ी होगा।

● प्रकाशक एवम् सम्पादक पूरन चन्द्र शर्मा, A-38, वसुन्धरा आवासन, पो. सेटेलाइट टाउनशिप, एन.एच.पी.सी. के पास, सिटी-सिलीगुड़ी-734015, जिला - जलपाईगुड़ी (पश्चिम बंगाल)।

आज भी दूर की कौड़ी है स्त्रियों की समानता

• सुरेन्द्रसिंह सेंगर



कोई भी कौम या संप्रदाय औरतों को हाशिए पर रख समाज व देश का सार्थक विकास नहीं कर सकता इतिहास इस बात का गवाह है कि एशिया-अफ्रीका महाद्वीपों में स्त्रियों की हालत आज भी बद से बदतर है। विभिन्न धर्मों के ठेकेदार आज भी चाहते हैं कि नारियां चार दीवारी में लौंडी-कनीज बनकर रहें। आदमी के जुल्म-ओ-सितम को ईश्वर की देन समझ खामोशी से सहती रहें। सारी तालीम और कायदे-कानून औरत जात के लिए ही हैं। मजे की बात यह है कि पुरुषों के 'कोड ऑफ कंडक्ट' को लेकर आज तक हाय तौबा नहीं है। आज विश्व की हर कौम-संप्रदाय की औरतों को इस अव्यक्त मारक पीड़ा के दौर से गुजरना पड़ रहा है। आइए इस पृष्ठ भूमि के तहत तफसील से चर्चा करें।

हिन्दू धर्म व दर्शन में स्त्री जाति के सम्मान में समय-समय पर कसीदे काढ़े गए हैं। सैद्धांतिक तौर पर उसके

संबंध में खोखली प्रशंसा की जाती है। दुर्गा, भवानी, जगत-जननी एवं मातृशक्ति जैसे भारी-भरकम विशेषणों से नारियों को मंडित किया जाता है। मंच से यह सुनने में अच्छा लगता है, पर व्यवहार में इसका उलटा हो रहा है। स्त्री को नरक की खान कहा गया है। माता-पिता पता नहीं किस धर्मशास्त्र के अनुसार अपनी ही संतानों अर्थात् बेटे-बेटी में अंतर कर रहे हैं। सती व दहेज प्रथा को आज भी मंडित किया जा रहा है और बेटी होने पर हर सास-ननद बहू को दोषी ठहराती हैं, क्योंकि सास-ननद को यह पता नहीं है कि लिंग के निर्धारण में स्त्री की कोई भूमिका नहीं होती है। संपत्ति में समान भाग लेने की अधिकारिणी आज भी नहीं है।

इस्लाम, हदीस व शरीयत में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में स्त्री के वाजिब हुकूम की चर्चा है पर मुल्ला, मौलवियों और उलेमाओं के मनमाने विश्लेषण के तहत आने

वाले भ्रामक व कभी-कभी इकतरफा फतवों के तहत दक्षिण एशिया व अफ्रीका महाद्वीपों की मुस्लिम महिलाओं की हालत कनीज की तरह है। चूंकि शिक्षा के अभाव में इन देशों के मुस्लिम पुरुष-महिलाएं अंधविश्वासी होते हैं, इन पर उलेमाओं का जबरदस्त प्रभाव होता है, जिसकी वजह से हदीस-शरीयत के नाम पर मुस्लिम खातूनें तरह-तरह के जुल्म सहती रहती हैं। इस्लाम में शादी एक संविदा है। जिसे मुकरर मैहर की रकम देकर या फिर एक ही सांस में तलाक-तलाक-तलाक कह करके पति बीवी से अलग हो जाता है। इस भेदभावपूर्ण नियमों की वजह से वहां मुस्लिम समाज में पुरुष मजे मारते हैं जबकि मुस्लिम महिलाएं घुट-घुटकर जीती-मरती हैं।

'लेडीज फर्स्ट' कहने वाले क्रिश्चियन समाज में भी स्त्रियों की हैसियत दौयम दर्जे की ही है। चूंकिमसीही समाज की महिलाएं

अनेकानेक कारणों से अन्य महिलाओं की अपेक्षाकृत जागरूक हैं इसलिए इस समाज द्वारा स्त्रियों के प्रति किए गए अत्याचार ढंके मुंदे रहते हैं। बाइबिल के अनुसार सोये एडम के शरीर से पसली की हड्डी निकालकर परमेश्वर ने 'ईव' को बनाया और 'ईव' का प्रतिनिधित्व करने वाली नारियां अतीत से लेकर आज तक तरह-तरह के अत्याचारों की शिकार हैं। ऊपरी तौर पर यूरोपीय लोग स्त्री को लेकर जितने 'नर्म दिल' दिखाई देते हैं, व्यवहार में नारियों को आहत करने का कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने देते हैं।

सवाल यह है कि दुनिया भर की औरतें बद से बदतर हालात में क्यों हैं? इस क्यों का उत्तर यह है कि संप्रदायों के घेरों में जब भी दीन-धर्म को लाया गया तब धर्म के ठेकेदारों ने धर्म के बाहरी स्वरूप को ऐसा गढ़ा कि पुरुष वर्ग की पांचों उंगलियां घी में और सर कढ़ाई में रहे जबकि खातूनें 'दासी' या 'कनीज' या 'नन' की शक्ल में घुट-घुटकर जीती-मरती रहीं।

जहां तक स्त्रियों की समानता की बात है वह व्यवहार में आज भी दूर की कौड़ी लगती है। हमारे देश का तो कहना ही क्या। कहने को तो वह जगदंबा, रणचंडी, जगत जननी आदिशक्ति और न जाने हम लोग क्या-क्या कहते हैं पर व्यवहार में सामंतवादी, फासिस्टवादी पुरुष तरह-तरह के बहानों से स्त्री जाति को पीछे धकेलने की जुगत में लगा रहता है।

वस्तुतः इस दुर्गति के लिए नारी की अपनी जन्मजात कमजोरियां ही हैं। उसका संकीर्ण सोच और सीरत से अधिक सूरत पर ध्यान को केन्द्रित करने से उसने अपने कद को जाने-अनजाने में कम किया है। सामाजिक उत्थान व सामाजिक मूल्यों के बदले इस प्रपंच आधारित

व्यक्तित्व उत्थान के लिए गांधारीवत जीवन यात्रा करने के कारण नारियां समाज में वह महत्ता हासिल नहीं कर पाई, जिसकी वे हकदार हैं। अगर हिन्दू समाज की नारियां दहेज व जलने के अभिशाप से अभिशापित हैं तो मुस्लिम समाज की महिलाएं 'तलाक-तलाक-तलाक' के एक पक्षीय फतवों से हलाकान हैं जबकि मसीही समाज की महिलाएं मैरिज कंट्रैक्ट एक्ट से कम परेशान नहीं हैं।

गरज यह कि स्त्री-पुरुष के बीच व्यवहार में 'स्वामी-दासी' जैसा रिश्ता होने से स्त्री जाति की विकास-यात्रा मंथर गति से बढ़ रही है, जो देश व दुनिया के लिए काफी दुःखद है। बराबरी की लड़ाई के लिए स्त्री जाति को अपने 'रोल मॉडल्स' को बदलते हुए कपड़े-गहने और कॉसमेटिक्स का अतिरेक मोह को त्याग कर 'रफ-टफ' की जिंदगी अपनानी होगी। आपके प्रेरणा स्रोत बहादुर, सामाजिक उत्थान चाहने वाले स्त्री-पुरुष होंगे तभी आप खुद को आंतरिक ऊर्जा से सराबोर पाएंगी। आपका यही परिवर्तित रूप पुरुषों के अत्याचारों के खिलाफ लड़ने की ताकत देगा। सभ्य समाज के एक पक्षीय धार्मिक संप्रदायों, धार्मिक पुस्तकों और धर्म गुरुओं के खोखले प्रवचन स्त्री जाति से छल करते जा रहे हैं। तमाम ज्ञान के उपरांत भी इप्स एण्ड बट का भ्रमजाल फैलाकर पुरुष वर्ग नारी जाति के उत्थान की राह में प्रथाओं, परम्पराओं के ईंट रोड़े अटकाता रहा है। दरअसल पुरुष वर्ग नहीं चाहता कि स्त्रियां उनके लिए चुनौती बनें। इसलिए जनम से बेटी को भारी अशुभ माना जाता है और सबके मुंह लटक जाते हैं। इस दोगली नीति के खिलाफ पढ़ी-लिखी व गैर पढ़ी-लिखी महिलाओं को एकजुट होना ही होगा। ●

सोना कितना सोना है....



□ उमेश कुमार साहू

साधारणतः आप अपने सोने के आभूषणों की सफाई किसी दुकान से करवाते होंगे लेकिन आप इन्हें घर पर भी आसानी से साफ कर चमका सकते हैं। परंपरागत तरीकों से भी आसानी से सफाई की जा सकती है।

सोने के आभूषणों को नर्म रुई से साफ करें। फिर एक चुटकी हल्दी पाउडर रुई की सहायता से आभूषण पर लगाएं। जेवर चमक उठेंगे।

पानी में थोड़ा-सा सिरका (विनेगर) मिलाकर आभूषण डाल दें। लगभग एक घंटे बाद निकालकर टूथब्रश से साफ करें।

पहले फिटकरी के पानी में डुबोएं। थोड़ी देर बाद इमली के पानी से धोएं।

गुड़ शक्कर के पानी से आभूषणों को धोने पर चमक बनी रहती है।

यदि सोने के आभूषण में नग लगे हैं तो सफेद नर्म कपड़े में लपेटें और पानी की भाप दें। सारी धूल-गंदगी व मलिनता दूर हो जाएगी।

यदि सोने की चेन में गांठ पड़ गई है तो टेलकम पाउडर छिड़कें। गांठ खुल जाएगी। ●

ताकि प्यार रूपी झरना निरंतर बहता रहे

पूनम दिनकर



किसी भी रिश्ते को जीवित रहने के लिये उसे प्यार की गरमाहट देना अनिवार्य है पर ध्यान रहे कि अधिक गरमी से जैसे पानी भाप बनकर उड़ जाता है और अधिक ठंड से जम जाता है, उसी तरह दांपत्य के प्यार का झरना निरंतर बहता रहे, इसके लिये यह आवश्यक है कि इस प्यार रूपी पानी का तापमान सही रहे। उसमें न तो बेहद गुस्सा और अहं हो और न ही अत्यधिक तटस्थता। दोनों ही बातों से संबंधों की नींव दरकने लगती है।

सुखी वैवाहिक जीवन के लिये एक सतत प्रयास की जरूरत होती है। अगर पति-पत्नी यह मानने लगें कि अब तो विवाह हो चुका है, अब जीवनसाथी कहां जाएगा तो निश्चित ही वे बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं।

सामाजिक परिस्थितियों को देखते हुए शायद एक-दूसरे को छोड़ना बहुत ही कठिन है परन्तु अपने जीवनसाथी से झगड़ते हुए निरंतर तनावपूर्ण कटुता में

एक छत के नीचे रहना शायद उससे भी अधिक कठिन हो जाता है।

पति-पत्नी के स्वभाव, रूचि, पसंद-नापसंद आदि में समानता का होना निश्चित नहीं होता। इन्हीं असमानताओं के कारण आपसी कलह की संभावना बन जाया करती है। यह आपसी कलह का कारण न बनने पाये, इसके लिए पति-पत्नी दोनों को एक-दूसरे का पूरक बनकर जीवन व्यतीत करना चाहिए। सरल उपायों द्वारा गृहस्थी रूपी बगिया को महकाया जा सकता है। जीवन में प्यार रूपी झरना निरंतर बहता रहे इसके लिये आप इन्हें आजमा कर तो देखिए। इस प्रयास के लिये आत्मनिरीक्षण करके देखिए।

हमेशा ध्यान रखें कि आपका जीवनसाथी हमेशा गलती ही नहीं करता बल्कि कुछ सही काम भी करता है। अतः केवल उसमें दोष को ही न ढूंढ़कर उसके गुणों को भी देखिए।

आप अपने मन में यह सोचकर

देखें कि आप अपने जीवनसाथी का कितना ध्यान रखते हैं और उसके लिये क्या करते हैं?

घर का संचालन आप दोनों का संयुक्त दायित्व है। उसमें अगर कुछ भी गलत हो रहा है तो उसके लिये आप दोनों ही जिम्मेदार हैं। केवल एक को ही दोष देना उचित नहीं।

बच्चे आप दोनों की ही जिम्मेदारी हैं। आप दोनों ही जब उनका हित चाहते हैं, तो फिर स्कूल, कपड़े या पालन-पोषण पर विवाद क्यों?

‘शक’ की दवा किसी भी हकीम के पास नहीं होती। अपने साथी पर किसी बात का शक होने पर बातचीत से दूर कर लें। शक को मन में आने ही न दें और विश्वास की नींव को हिलने न दें।

आपसी झगड़ों में गुस्से में कोई ऐसी बात न कहें जो आपके साथी को जीवन भर के लिये घायल कर दे। गुस्से की भी एक सीमा होती है। मर्यादा की

लक्ष्मण रेखा को न लांघें।

रोज के छोटे-मोटे विवादों को रोज ही खत्म कर दें। ऐसा न हो कि ये तिल का ताड़ और राई का पर्वत बन जाये।

जीवन में हरेक को सब कुछ नहीं मिलता। जो अपने पास है, उसी में संतोष करके प्रसन्न रहिए। समझौते तो करने ही पड़ते हैं।

आपको खुशी तभी मिलेगी जब आप अपने साथी को खुश रखेंगे। अगर रोज लड़ाई-झगड़ा और तनाव के बीच ही समय बीतेगा तो कौन किसको खुश रख सकेगा?

बच्चों के सामने कभी भी लड़ाई मत करिये। इससे उनकी नजर में आपकी प्रतिष्ठा कम हो जाएगी।

कभी भी अपनी पसंद अपने साथी पर न थोपें। जहां तक हो सके, एक दूसरे के व्यक्तित्व को मान्यता दें। जो काम आपको पसंद हो, जरूरी नहीं कि आपके साथी को भी पसंद हो, यह बात बिना विवाद के स्वीकारें।

हो सकता है सेक्स आपके लिए महत्वपूर्ण न हो पर आपके साथी के लिए वह प्यार का अनिवार्य अंग हो। इसे खुले मन से स्वीकार करें और एक-दूसरे की इच्छा का सम्मान करें।

शारीरिक संबंधों को उम्र के साथ रूटीन न बनाएं। सेक्स वैवाहिक संबंधों की नींव है। इसमें से कुछ नयापन, कुछ खुलापन, एक-दूसरे के और करीब लाता है।

अपने जीवन साथी की तुलना किसी परिचित से न करें। संपूर्ण अच्छाइयां किसी भी इंसान में नहीं हुआ करती। जो मिला है उसे ही सम्पूर्ण मन से स्वीकार करें। अपने को सब तरह से पूर्ण या आदर्श न मानें। आपके स्वभाव के दोष या कमियां आपका साथी सबसे अधिक जानता है। ●

फुलेश्वरी

आंवले के गुण

● सुभाष बुड़ावनवाला



आंवला विटमिन सी का प्रमुख स्रोत है। इसमें मौजूद यह विटामिन कभी खत्म नहीं होता। घरों में आंवले का अचार और मुरब्बा भी तैयार किया जाता है और इसका सेवन भी सेहत बनाने वाला होता है। इतना ही नहीं ये मुंह के छालों को भी दूर करने में कारगर है। यह चर्बी तो घटाता ही है, साथ में अच्छे बालों के लिए भी असरदार है। आइए, आज आंवले के कुछ ऐसे ही गुणों के बारे में बताते हैं।

मुंह के छाले होने पर आंवले की पत्तियों को चबाया जाए तो छालों में आराम मिल जाता है। खाना खाते समय अगर जीभ दांतों के बीच आ जाए और खून निकल आए, तो तुरंत आंवले की पत्तियां चबा लें।

डायबिटीज भी करता है कंट्रोल: यह डायबिटीज कंट्रोल करने में भी काफी फायदेमंद है। आंवले के सूखे फलों और पत्तियों की समान मात्रा ली जाए और इन्हें कुचल लिया जाए। इस मिश्रण में हल्दी का चूर्ण मिलाया जाए और दिन में कम से कम दो बार खाने

के बाद लिया जाए तो डायबिटीज पर कंट्रोल पाया जा सकता है।

हिचकी रोकता है : आंवला, कैथ का गूदा, छोटी पीपर का चूर्ण, शहद से चटाएं तो हिचकियां रोकी जा सकती हैं।

आंखों को फायदा : आंवले का छिलका कूटकर पानी में भिगोकर रखें। इसे कपड़े से साफ छानकर दिन में तीन बार 2-2 बूंद आंखों में टपकाएं।

एनर्जी भी देता है : शारीरिक ताकत और मजबूती के लिए आंवले के फलों को उत्तम माना गया है। आंवले के फलों के चूर्ण के साथ अगर गिलोय के तने का चूर्ण भी मिला लिया जाए, तो शरीर में ऊर्जा का जबरदस्त संचार होता है।

मानसिक ताकत बढ़ाता है : शहद के साथ आंवले के चूर्ण को खाने से भी मानसिक ताकत बढ़ती है। आंवले को तिल के साथ मिलाकर 20 दिनों तक हर दिन सुबह खाली पेट खाया जाए, तो शरीर को चुस्त होने में वक्त नहीं लगता है। ●

लड़के की शादी कैसे करें?



● वजेन्द्र कोहली गुरदासपुरी

कोशिश करें कम खर्च एवं असुविधा में विवाह संपन्न हो जाएं। हमारे एक मित्र ने अपने बेटे की शादी में दो कार्यक्रम रखे पहले में लड़की वालों के घर जाकर रिंग सैरमनी, चुन्नी सैरमनी और शगुन ले लिया। मर्यादा में दोनों पक्षों में आदान-प्रदान किया। इस समारोह में सिर्फ 20-25 रिश्तेदार ले गए, फिर तीसरे दिन 80-100 तक मित्र लेकर शादी के लिए कन्यापक्ष के शहर में बारात लेकर समारोह संपन्न करके वापस आ गए। शादी का समारोह दिन के उजाले एवं रविवार के दिन किया गया। लड़की के रिश्तेदार एवं लड़के के रिश्तेदार उस दिन फ्री थे। दिन में बारात अटैंड करने में किसी को दिक्रत नहीं आई, सबने समारोह का आनंद लिया।

लड़के वाले कभी किसी वस्तु या दहेज का लालच न करें। दहेज की मांग करना कानूनी अपराध है। इससे बचें। अपनी इच्छा से कन्या पक्ष उपहार दे तो स्वीकार करें। सब कुछ कन्यापक्ष की इच्छा मर्यादा पर छोड़ दें। वर पक्ष लालची न हो, अपनी जरूरतों का चिट्ठा न सुनाए। लड़की को दहेज देना पाप नहीं है परन्तु दहेज मांगना पाप है। नव विवाहित वर-वधू का जीवन सुखी बनाने के लिए दोनों पक्ष सुविधा जुटाएं, लेकिन मर्यादा से बाहर नहीं। कन्यापक्ष के लोग शादी के बाद वर-वधू के जीवन में हस्तक्षेप न करें। वर पक्ष के माता-पिता भी दोनों के जीवन को सुविधाजनक बनाएं। असुविधाएं आड़े नहीं आने दें। दुल्हन को दहेज समझे। यदि सास, मां का रूप ले ले और बहू-बेटी की भूमिका निभाए तो सास-बहू की परिभाषा बदल सकती है परन्तु यह सबके सहयोग द्वारा संभव हो सकता है। ससुर, बहू को बेटी माने। सास अपनी सत्ता को छिनती न माने। ननद बहन बन जाए। सुख-शांति का सृजन कस्ता आपके अपने हाथ में है। ●

जब पुत्र का जन्म होता है तो माता-पिता गर्व से फूले नहीं समाते कि पुत्ररत्न मिला है। उसे पाल-पोसकर, पढ़ा-लिखाकर, जीविका कमाने योग्य बनाकर उसका विवाह निश्चित किया जाता है। अपने परिवार एवं लड़के के स्वभाव, रुचियों के अनुसार कन्या की खोज की जाती है।

रिश्तेदार, मित्रों की सहायता से उचित परिवार की गुणी कन्या का चयन किया जाता है। समाचार-पत्रों के मैट्रीमोनियल की भी सहायता ली जा सकती है। पूर्ण पृष्ठताछ एवं जानकारी करने के बाद ही वधू का चयन करें।

कन्या पढ़ी-लिखी सुसंस्कृत, मधुरभाषी, होनी चाहिये। आज का युग महंगाई का है, जब तक दोनों पति-पत्नी-आजीविका कमाने योग्य न हों निर्वाह करना मुश्किल हो जाता है। जब बात पक्की हो जाती है तो उचित समय जानकर शगुन के रूप में मिष्ठान और कुछ रुपए देकर लड़का-लड़की को रोक लिया जाता है, ताकि दोनों पक्षों की वर-वधू की तलाश समाप्त हो जाए।

लड़की की शादी हो या लड़के

की, दोनों काम खर्चीले होते हैं। खर्चा दोनों पक्ष का लगभग बराबर ही रहता है। अपनी सुविधा, बजट, जेब के अनुसार सब कार्य करें। दुनिया की देखा-देखी, मजबूरी में कुछ न करें। जो आपको अच्छा लगता है, वहीं कार्य आराम से करें। कुछ लोग चुन्नी चढ़ाकर भी शादी कर लेते हैं। जहां दोनों पक्षों का खर्चा बच जाता है। अपने घर आकर वरपक्ष रिसेप्शन दे देता है परन्तु पारंपरिक ढंग से। लड़के वाले बहू के लिए अपनी सुविधानुसार ही गहने, आभूषण बनवाएं जो आजकल बहुत महंगे हो चुके हैं। रीति-रिवाजों पर खर्च करने का अन्त कोई नहीं परन्तु फिर भी सब कुछ मर्यादा एवं सुविधा के अनुसार ही करना चाहिए।

शादी की रस्मों को पूरा करने के कई ढंग हैं। वरपक्ष वाले कई बार आग्रह करते हैं कि वे शादी समारोह वर-पक्ष के शहर में आकर करें यह सरासर गलत एवं अनुचित प्रथा है। लड़की पक्ष के परिवार को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। दूसरे शहर में शादी करने के लिए यह अनुमान आप स्वयं लगा सकते हैं।

फुलेश्वरी के द्वितीय अंक में प्रकाशित होने वाले लेखों के शीर्षक

- आज भी दूर की कौड़ी है स्त्रियों की समानता
- सोना कितना सोना है....
- ताकि प्यार रूपी झरना निरंतर बहता रहे
- आंवले के गुण
- लड़के की शादी कैसे करें ?
- रखें अपने घर को सुरक्षित
- कितना मेल कराते हैं बेमेल विवाह
- आज सास बन गयी है बेचारी
- इमरजेंसी गर्भ निरोधक गोलियों का गलत प्रयोग है खतरनाक
- बच्चों का बचपन छीन रहे हैं प्लेस्कूल
- बच्चे उपद्रव क्यों करते हैं ?
- जब शनि देव को बनना पड़ा स्त्री..
- चेहरे के हिसाब से बालों को संवारने के टिप्स
- बढ़ायें अपने नेत्रों का सौन्दर्य
- सिर्फ बाल ही नहीं चमकाता शैम्पू
- बच्चों के दांतों का रखें ख्याल
- कई रोगों को दूर करती है तुलसी
- वक्ष सौंदर्य - कुछ आवश्यक तथ्य
- ताली बजाना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद
- स्वस्थ रहने का साधन है नृत्य
- रामेश्वरम्
- साप्ताहिक व्रतोत्सव

महिलाओं की एक सम्पूर्ण पत्रिका

फुलेश्वरी

हिन्दी साप्ताहिक डिजिटल पत्रिका

विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें -:

ज्वेलरी शोरूम, साड़ी-सलवार सूट-पीस के शोरूम, किड्स वियर, जामना आईटम्स, ब्यूटी पार्लर, बूटिक, ब्राईडल मेकअप, कॉस्मेटिक आईटम्स, इवेंट मैनेजर, गीत-सम्मेलन, खाद्य सामग्री, ग्रीसरी शॉप, किचन आईटम्स, विवाह सामग्री आदि के विक्रेता, प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ (OB-GYN), शिशु रोग विशेषज्ञ (Paediatrician), Banquet Hall, Vegetarian Restaurant आदि प्रतिष्ठान विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें।

आपका विज्ञापन सीधे महिलाओं तक पहुंचने का एक सशक्त माध्यम।

सम्पर्क :-

95641 - 41111, 97493 -19011, 98320 - 66383



Gems Queen Jewellers &

New



Gems India Jewellers

A Unit of Silver Queen Jewellers



CAT'S EYE



EMERALD



GOMED



DIAMOND



PEARL



BLUE SAPPHIRE



RUBY



RED CORAL



YELLOW SAPPHIRE

- Certified Gems Stones
 - Silver Payal & Utensils
 - Gold Jewellery
 - Buy Back Guarantee
 - Astrology Consultation
- Also Available

Seth Srilal Market, Siliguri - 734001

Prem Kr Sinhal
9832461041

Harish Kr Sinhal
8509676114

Pushpak Sinhal
9832417992